Page No.
Date

कविता - 3
सच हम नहीं; सच तुम नहीं

सच हम नहीं, सच तुम नहीं .....
...... टूटे नहीं इन्सान, बस! संदेश यौवन का यही
सच अभी हम नहीं, सच तुम नहीं।

(पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 12-13)

कृति 1 (आकलन)

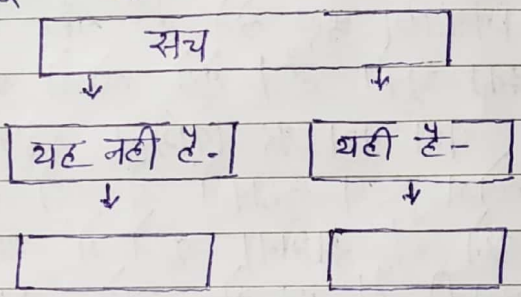

1) कृति पूर्ण कीजिए :

(1)

सच	
यह नहीं है-	यही है-

(2) लिखिए —

(1) जीवन यही है —

1) नत न होना।
2) पंथ भूलने पर भी न रुकना।
3) हार देखकर भी न झुकना।
4) मृत्यु को भी जीत लेना।

(2) जीवन का संदेश

1)
2)
3)
4)

(3) उत्तर लिखिए।

1) नत होने से मृत जैसा होने की तुलना की गई है इससे .....
2) काँटे चुभें, कलियाँ खिलें का अर्थ ....

कृति - (2) (शब्दसंपदा)

* प्रत्येक शब्द के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए —

1) पंथ — [ ] [ ] 5) नीर — [ ] [ ]

2) कौआ — [ ] [ ] 6) नयन — [ ] [ ]

3) कुसुम — [ ] [ ]

4) हार — [ ] [ ]

कृति - 3 (अभिव्यक्ति)

* 'संघर्ष करनेवाला व्यक्ति ही जीवन का लक्ष्य प्राप्त करता है' इस विषय पर अपने विचार 40 से 50 शब्दों में लिखिए।

उत्तर- दुनिया में दो प्रकार के मनुष्य होते हैं। एक वे जो सामान्य रूप से चलनेवाली जिंदगी जीना पसंद करते और आगे बढ़ने के लिए किए जानेवाले उठा-पटक को पसंद नहीं करते। दूसरे तरह के लोग होते हैं, जो अपना लक्ष्य निर्धारित कर लेते हैं और उसे प्राप्त करने के लिए संघर्ष का रास्ता चुनते हैं। ऐसे लोगों का जीवन आसान नहीं होता। इन्हें पग पग पर विभिन्न रुकावटों का सामना करना पड़ता है। पर ऐसे लोग इन रुकावटों से डरते नहीं, बल्कि हंसते-हंसते इनका सामना करते हैं। सामना करने में अनेक बार असफलता भी इनके हाथ लगती है पर ये इससे हताश नहीं होते। ये फिर अपनी गलतियों को सुधारते हैं और नए सिरे से संघर्ष करने में जुट जाते हैं। परिस्थितियाँ कैसी भी हो वे न झुकते और न हताश होते हैं। इनके सामने सदा इनका लक्ष्य होता है। ऐसे लोग अपनी निष्ठा और लगन के बलपर एक-न-एक दिन अवश्य सफल हो जाते हैं। वे जीवन का संघर्ष प्राप्त करके रहते हैं।

(2) उत्तर लिखिए —

1) मिलना वही है —

2) वह जिंदगी जिंदगी नहीं है —

3) हर रात को इससे दिशा मिलती है —

4) कवि तब तक इस रात को रात नहीं मानेगा —

③ पद्यांश पर आधारित दो ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हो।

① आकाश ② धरती

Scanned by CamScanner

पद्यांश क्र - (2)

हमने रचा, आओ! हमीं अब तोड दे प्यार को ...
..... सच हम नही, सच तुम नही :

कृति - (1) (आकलन)

* 1) कविता की पंक्तियाँ पूर्ण कीजिए।

1) अपने हृदय का सत्य......
2) आदर्श हो सकती नही .....
3) बेकार है मुस्कान से ढकना ....
4) अपने नयन का नीर,

(2) (1) मिलना वही है - ....
(2) जल जिंदगी जिंदगी नही है ....
(3) हर राही को इससे दिशा मिलती है
(4) कवि तब तक इस राह को सही नही ~~मिले~~ मानेगा ...

(3) पद्यांश पर आधारित दो प्रश्न तैयार ~~कीजिए~~ कीजिए
(1) आकाश (2) धरती

कृति - 2 : (शब्दसंपदा)

1) प्रत्येक शब्द के दो - दो पर्यायवाची शब्द लिखिए
1) फूल - [ ]
2) धरती - [ ]

विरुद्धार्थी शब्द लिखिए :
1) तोडना ×
2) सच ×
3) दुख ×
4) बेकार ×

कृति - (3) (अभिव्यक्ति)

* जीवन निरंतर चलते रहने का नाम है' इस विचार की सार्थकता 40 से 50 शब्दों मे लिखो।

* ~~र~~ रसास्वादन *

सच ~~नह~~ हम नही, सच तुम नही कविता का रसास्वादन कीजिए।

Scanned by CamScanner

उत्तर —

1) रचना का शीर्षक : सच हम नहीं, सच तुम नहीं

2) रचनाकार : डॉ० जगदीश गुप्त

③ कविता की केंद्रीय कल्पना : प्रस्तुत कविता में निरंतर आगे बढ़ते रहने, संघर्ष करते रहने और मार्ग में आनेवाली रुकावटों की परवाह न करके अपने लक्ष्य की प्राप्ति की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा दी गई है। यही इस कविता की केंद्रिय कल्पना है।

④ रस- अलंकार :—

⑤ प्रतीक विधान : इस कविता में संघर्ष का मार्ग त्याग कर नत हो जाने यानी किसी की अधीनता स्वीकार कर लेने वाले को मृतक के समान हो जाना कहा गया है। कवि ने इस तरह के मृत व्यक्ति के लिए 'डाल से झड़े हुए फूल' का प्रतीक के रूप में उपयोग किया है।

⑥ कल्पना — जीवन में दृढ़तापूर्वक संघर्ष का मार्ग अपनाना और निराश हुए बिना अडिग रहना ही जीवन की एकमात्र सच्चाई है।

⑦ पसंद की पंक्तियाँ का प्रभाव

अपने हृदय का सत्य .....
..... अपने आप हम को पोंछना।

इन पंक्तियों में अपनी समस्याओं को पहचानने और उनका समाधान ढूँढने के लिए बिना किसी की सहायता का उम्मीद किए स्वयं कमर कसकर तैयार होने की प्रेरणा मिलती है।

⑧ पसंद आने का कारण :—

कवि ने इस पंक्ति में यह बताया है कि संघर्ष में असफलता हाथ लगे, तो भी निराशा होने की जरूरत नहीं है। हमे अपने आप अपनी आँखों के आँसू पोंछकर फिर से हिम्मत के साथ संघर्ष में जुट जाना है।

साहित्य संबंधी सामान्य ज्ञान

जानकारी दीजिए —

1) नई कविता के अन्य कवियों के नाम — [ ]

2) कवि डॉक्टर जगदीश गुप्त की प्रमुख साहित्यिक कृतियों के नाम — [ ]

* लिंग परिवर्तन

① बहुत चेष्टा करने पर भी हरिण न आया।
② सिद्धहस्त लेखिका बनना ही इनका एकमात्र सपना था।
③ तुम एक समझदार लड़की हो।
④ मैं पहली बार वृद्धाश्रम में मौसी से मिलने आया था।
⑤ तुम्हारे जैसा पुत्र भगवान सब को दे।
⑥ साधु की विद्वत्ता की बात दूर दूर तक फैल गई थी।

* अलंकार

निम्नलिखित काव्य पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार पहचान कर उनके नाम लिखिए।

1) हरि पद कोमल कमल से।
2) झूठे जानि न संग्रही मन मुँह निकसे बैन।
थाहि ते मानहुँ किए बानन को बिधि नैन।
3) पायो जी मैंने राम रतन धन पायो।
4) हनुमान की पूँछ में लगन न पाई आग।
लंका सिगरी जल गई गए निशाचर भाग।
5) एक म्यान में दो तलवारें कभी नहीं रह सकती।
किसी और पर प्रेम पति का नारियाँ नहीं सह सकती।

* रस

* निम्नलिखित काव्य पंक्तियों में प्रयुक्त रस पहचान कर लिखिए।

1) काहु न लखा सो चरित बिसेखा। सो सरूप नृप कन्या देखा।
मर्कट बदन भयंकर देही। देखत हृदय क्रोध भा तेही।
जेहि दिसि बैठे नारद फूली। सो दिसि तेहि न बिलोकी भूली।
पुनि- पुनि मुनि उकसहिं अकुलाहीं। देखि दसा हर गन मुसुकाहीं।

2) जो हो तव अनुशासन पावों
तो चंद्रमहि निचोड़ि चैल ज्यों आनि सुधा सिर नावों।
~~ब्यालावली~~ के पाताल दलौं ब्यालावलि अमृत कुंड महि लावौं।
भेदि भुवन, करि भानु बाहिरो तुरत, राहु दै नावौं।
बिबुध बैद बरबस आनौं धरि, तो प्रभु अनुग कहावौं।

3) ~~कहुँ~~ कहुँ सुलगत कोउ चिता, कहुँ कोउ जात लगाई।
एक लगाई जात, एक की राख बुझाई।

मुहावरे

Page No.
Date

1) गुड गोबर करना – बने काम को बिगाड देना।
वाक्य – चित्रकार का चित्र तैयार था तभी एक छोटे बच्चे ने आकर उसपर ऐसी कूँची फिराई की सारा गुड गोबर हो गया।

2) जहर का घूँट पीना – अपमान को चुपचाप सह लेना।
वाक्य – मुंशीजी अपने चपरासी से कभी कभी जब पैर दबा देने की बात करते थे तब वह जहर का घूट पीकर रह जाता था।

3) तिल का ताड बनाना – छोटी बात को बढायचढाकर करना
वाक्य – रमेश की बात विश्वास करने लायक नही होती उसकी तो तिल का ताड बनने की आदत है।

4) मुट्ठी गर्म करना – रिश्वत देना।
वाक्य – गाँवो मे छोटा मोटा काम करवाने के लिए भी अधिकारियों की मुट्ठी गर्म करनी पडती है।

5) पत्थर की लकीर – पक्की बात
वाक्य – गाँव के लोग वकील साहब की बात को पत्थर की लकीर मानते थे।

Scanned by CamScanner